अंजू 'सुंदर'

लखनऊ, उत्तर प्रदेश

रोशनदान

तुम
चाहते हो आज भी
रोकना–टोकना
और पैनी दृष्टि गड़ाना,
तभी तो तुमने
पाला चिड़ियों को पिंजरों में
रखा मछलियों को एक्वेरियम में
तितलियां रोकने को जाल बांधे,
पर
स्त्रियां थीं
चहारदीवारी में बंद
जहां उन्होंने खोजे
रोशनदान
सबसे ऊंची दीवारों में
और
बालिश्त भर
खुले दराज से
हुंकारती वो
छू आई नीलाभ को।

उत्तर

मन की
अलगनी
पर टंगे हैं
कुछ प्रश्न
बाट जोहते
उत्तरों की....
उत्तर जो प्रश्न से पहले ही आ जाते हैं।